Chapter-7

सप्तम अध्याय

७ प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी का शिष्य परिवार का विवरण

७-१ बड़ौदा के संगीत क्षेत्र के दिग्गज कलाकारों का साक्षात्कार

सप्तम अध्याय

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य परिवार का विवरण

किसी भी कलाविधा के घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिये हरेक गुरु का शिष्य परिवार होना अत्यंत जरुरी होता है। इस लिये शिष्य परिवार का भी उतना ही महत्व होता है। अपने गुरु के पास से सच्ची तालिम लेने के बाद वह विद्यार्थी दुसरे विद्यार्थी को सिखाकर अपने गुरु एवं घराने का कार्य आगे बढ़ायें, यह माना जा सकता है कि गुरु को एक गुरु दक्षिणा समान यह कार्य शिष्यों द्वारा हो सकता है। किंतु प्रो. सुधीरकुमारजी ऐसे तबला वादक थे जो तबला विधा के शास्त्र पक्ष एवं कार्य पक्ष में माहिर थे इस लिये उनका कार्यक्रमो द्वारा यह सिलसिला पूरे भारत वर्ष में और बड़ोदा आने के बाद पूरे गुजरात में चलता रहता था। गुजरात के सभी प्रमुख शहरो में उनका एकल तबला वादन एवं साथसंगत के कार्यक्रम चलते रहते थे। आपको सुनने के बाद जिसे भी तबला सीखने की इच्छा होती, वह बड़ोदा आ कर उनके घर या म्युजिक कॉलेज में दाखिला लेता था इस लिये गुजरात के सभी प्रमुख शहरों से काफी विद्यार्थी आने लगे जैसे की अहमदावाद, राजकोट, भावनगर, जुनागढ, सुरत इत्यादि प्रमुख शहरो से और

छोटे कस्बों से भी असंख्य विद्यार्थी सीखने के लिये आने लगे। इन मेंसे कुछ चुने हुए प्रमुख शिष्यों का विवरणं दिया गया है।

१ स्व.गणपतराव घोडके :

आप ऐसे तो पखावज बजाते थे और पर्वतसिह घराने से ताल्लुक रखते थे। साथ ही आप को तबले की भी जानकारी थी उसी तरह से नाल जो लावणी नृत्य के साथ बजाते हैं उसपर भी आप का आधिपत्य था। आप का तबला वादन सुन ने के बाद सुधीरकुमार जी ने आप को म्युजिक कॉलेज में व्याख्याता के पद पर नियुक्त किया उसके बाद आप प्रो.सुधीरजी के दाहिने हाथ बनकर रहे और अंतिम समय तक उनके साथ रहे, आपने असंख्य बड़े कलाकारों के साथ साथसंगत की, आप रेडियो के स्टाफ कलाकार रह चुके थे। आपका खुद का शिष्य परिवार गुजरात और महाराष्ट्र में आज भी कार्यरत है।

२ स्व.पी पी भोरवानी,राजकोट

गुजरात के राजकोट शहर के जाने माने तबला वादक श्री परशुरामजी ऐसे तो करॉंची शहर (पडोसी देश पाकिस्तान) से आये थे परंतु गुजरात के राजकोट शहर में उनका निवास स्थान था। आप तबला क्षेत्र में राष्ट्रीय कक्षा के तबला वादक थे। किन्तु उनकी असली पहचान तो एक आदर्श शिक्षक की

रही थी। कला जीवन लक्षी है उस पर उनका जादा जोर होता था इसलिये आप विद्यार्थी वर्ग में खूब लोकप्रिय थे। आप के मार्गदर्शन और प्रेम से राजकोट प्रदेश के जितने भी विद्यार्थी गण हैं वे सभी अच्छी तरह से तबला वादन करते है। इन में से बलराज चौधरी, किशोर शाह, प्रदीप रावल, जगदीश चंद्र, प्रवीण ओझा, हरिन्द्रतन्ना, पुरुषोत्तम वागडिया, कु मृणालीनी मेहता, झिन्दे हसन, देवेन्द्र दवे मुख्य रहे है। अपने गुरु प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी से तालीम लेने आप राजकोट से बड़ौदा हप्ते में एक बार आते थे।

आपका अजराड़ा के कायदो पर अच्छा प्रभुत्व था और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। आप कलाकार तो थे किंतु राष्ट्रपर जब भी कोई आफत आयी हो तब आप अपने राष्ट्रिय कार्य करने में जुट जाते थे।

चीन और भारत युद्ध के समय आपने ५० हजार रुपये और सो तोला सोना इकठ्ठा किया था। आपने अनेक नाटकों में संगीत दिया था। आप राजकोट म्युजिक कॉलेज के आचार्य पद पर कार्यरत थे। आप ऐसे तो इन्डियन डेरी फार्म में गोल्ड मेडलिस्ट थे। आप का देहांत सन् २२-१२-१९८५ में हुआ।

३ श्री उमेशभाई मेहता, अहमदावाद :

आप एक आदर्श तबला वादक है। आप प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के पूराने शिष्यो में से एक हो। हप्ते में दो दिन आप बड़ौदा आ कर गुरुजी के घर आ कर तबला सिखते थे। आप का हाथ इतना साफ सुतरा था याने जो भी बजाते वह संपुर्ण व्यवस्थित सुनाई देता। तिरकीट, धीरधीर के कायदे और गतों पर आपका प्रभूत्व था। इस लिये गुजरात संगीत नाटक अकादमी द्वारा आपको साथ, संगत करने के लिये आमंत्रीत किया जाता था। आपने भारत वर्ष के सभी जाने मान्य कलाकारों के साथ संगत की है। आप के अहमदावाद में अनेक शिष्य है।

४ स्व. काळुराम भवरीया :

आपका जन्म ऐसे कुल में हुआ, जहाँ संगीत का माहौल था। आपका जन्म १९-४-१९२८ में राजस्थान में हुआ। फलतः इनकी रगों में संगीत दौड़ रहा था। आपने तबला वादन की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिताजी श्री. गुलाबजी बारोट से ली। श्री गूलाबजी बारोट स्वयं ऊस्ताद रहमानखान इन्दोरवालेजी के शिष्य थे।

आपने तबले की शिक्षा अपने पिताजी से ली। तत्पश्चात् आप १९६० में गुजरात के बड़ौदा शहर में बस गये। आपका परिचय प्रो. सुधीरकुमार

सक्सेनाजी से हुआ, अजराड़ा घराने की तालिम लेनी की शुरुआत की। आप सुधीरकुमार सक्सेनाजी के गंडाबंध शागिर्द थे। आप सन् २२-९-१९६२ में म्युजिक कॉलेज में ऊस्ताद के पद पर नियुक्त हुए। आप सन १९५६ में रेडियो के बी+ ग्रेड के मान्य कलाकार बन गये। आप साथसंगत करने में बड़े थे माहिर एवं हाजरजवाबीसे गायन एवं वाद्य के साथ संगत करते थे। आपने गुजरात संगीत,नाटक अकादमी द्वारा योजित कई संगीत संम्मेलनों में तबले पर कुशल संगत की है। आप क्लेरोनेट भी अच्छी तरह से बजा लेते थे।

आपने गुजरात के अलावा पूरे भारत वर्ष में कई दिग्गज कलाकारों के साथ बजाया जैसे पं.जसराजजी, पं.मणिरामजी, प्रभा अत्रेजी, ऊस्ताद अब्दुलअली जाफ़र खाँ सितार, पं.बुधादित्य मुखर्जी, सितार, श्री सत्यदेव पवार, श्री दयानंद गांधर्व, गायन इत्यादि कलाकरों के साथ आपने संगत की।

५ श्री रविन्द्र निक्ते :

आपका जन्म बड़ोदा शहर में ३-१२-१९४२ में हुआ । आप के पिता जी श्री.श्रीधर निक्ते जाने माने भजनाचार्य थे और शास्त्रीय संगीत में रुचि रखते थे। इस लिये आपने अपने बच्चे को तबला सिखाने के लिये बड़ौदा के तबला वादक श्री.लक्ष्मणराव दातेजी के पास भेजा और आपकी प्रारंभिक

शिक्षा शुरु हुई। इसके बाद आपने म्युजिक कॉलेज में दाखिल हुऐ और आप १९६० में सुधीरजी के परिचय में आये और उनका शिष्यत्व प्राप्त किया। और आप सुधीरजी के सबसे पुराने शिष्यो में माने जाते हैं। आप के वादन में अजराड़ा घराने की संपूर्ण शैली दिखाई देती है। आप दुरदर्शन एवं आकाशवाणी के अे+ ग्रेड आर्टिस्ट पद पर सेवा करते हुए निवृत्त हुए ।

आप शास्त्रीय संगीत के अच्छे गायक भी है ओर आपने पँ. भीमसेन जोषीजी से और बड़ोदा के पं. पोतदारजी से संगीत की तालीम ली। आपने मराठी में अभंगवाणी नामक कार्यक्रम पूरे देश भर में किये।

आपने गुजरात संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित कई संगीत कार्यक्रमों में साथ संगत की। आप एक सिध्दहस्त कलाकार हैं और आप एक अच्छे एकलवादक हैं और साथसंगत करने में निपुण हैं। पूरे भारत वर्ष में आपने बड़े कलाकरों के साथ संगत की है। आपने आजतक पं. गजाजनराव जोषी, उस्ताद अब्बदुल हालिम जाफर खाँ, परवीन सुलतान, श्री. विठ्ठलराव कोरगावकर, पं. शिवकुमार शुक्ल, बसवराज राजगुरु, श्रीमती कंकणा बॅनर्जी, पं. राजन साजन मिश्रा, श्रीमती मालिनी राजुरकर, पं. अजय पोहनकरजी इत्यादि कलाकरों के साथ कुशलता पूर्वक संगत की है। आपका भी शिष्य

परिवार देश विदेश मे कार्यरत है। और अजराड़ा घराने को विकसित करने में इनका योगदान महत्व पूर्ण है।

६ स्व. मधुकर नानासाहेब गुरव :

पीढ़ियो से चले आ रहे संगीत परिवार में दि २१-८-१९५४ में आपका जन्म हुआ। आप के पिताजी का नाम स्व. नानासाहेब गुरव था और आप एक हिन्दुस्तान के जानेमाने पखावजी थे। आप खुद महाराजा सयाजीराव प्रस्थापित म्युजिक कॉलेज में प्राध्यापक की हेसियत से कार्यरत थे वह भी तबला विभाग में। आपने आपकी प्रारंभिक तालीम अपने पिताजी के पास ६ साल की उम्र में शुरु की। बचपन में आप के पिताजी का अवसान हुआ। बाद में १९६६ में म्यूजिक कॉलेज में दाखिला लिया और उसी समय से आप प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के संपर्क में आये।

प्रो. सुधीरजी का तबलावादन एवं शिक्षा देने की आसान सी रीति से आपने मन में ठान लिया की आगे का तबला सिखूंगा तो, केवल गुरुजीसे। गुरुजी के प्रति प्रेम भावना होने के कारण आपने गुरुजी के पास से सिर्फ अजराड़ा घराने की तालीम प्राप्त न करते दूसरे घरानो की भी तालिम प्राप्त की, और आपने देखा कि अजराड़ा घराना इन सभी घरानों से हठकर है ऐसा मानकर इस में जो भी खूबियाँ है उस पर कठोर परिश्रम किया इस में

आपको सफलता भी मिली और अजराड़ा बाज मंजिल पर बजाये तो हि सुनने में अच्छा लगता है ऐसा आपने महसूस किया। आप आकाशवाणी केन्द्र के अे+ग्रेड के कलाकार थे। आपका बजाना इतना मधुर एवं शुध्द होने के कारण संगीत जगत में आपने लोकप्रियता प्राप्त की और आकाशवाणी द्वारा योजित वाद्य संगीत में आपका अखिल भारतीय स्तर पर पहला क्रमांक आया। आप आकाशवाणी अहमदावाद, वड़ोदरा स्टेशन पर कार्यरत थे शोधार्थी और आप में एक मित्रता होने के कारण आपने बताया की जब मेरा तबादला राजकोट आकाशवाणी केन्द्र पर हुआ तब वहाँ का रियाज़ आपकी जिंदगी में सबसे बड़ा मकाम था। आपने पूरे देश में भ्रमण किया और जगह जगह आप को सराहना प्राप्त हुई। उसके बाद सन् १९८१ से आपने महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटि के म्युजिक, डान्स अँड ड्रॉमेटिक्स में आप प्राध्यापक की हैसीयत से जुड गये। और निरंतर सेवा दी। अल्प आयु में निधन होने के कारण। तबला जगत नें अच्छा तबला वादक खो दिया। प्रो.सुधीरजी हमेशा कहते थे की मेरा दायना हाथ गुम हो गया। आप गुरुजी के सभी शिष्यो में पट्टशिष्य थे।

७ श्री. श्रीधर पुष्कर :

पंडित किशनलालजी के खानदान में १५-९-१९५२ में आपका जन्म हुआ। बचपन से ही घर में संगीतमय वातावरण था। आप सुर और ताल के वातावरण में आप बडे हुए। आपके तबले की तालीम ६ साल की उम्र में शुरु हुई। आप का घराना देखा जाय तो कथक नृत्य के साथ जुडा है और जयपुर घराने से ताल्लुक रखता है।

छोटी उम्र में आप को सही तालीम प्राप्त होने से आपकी रुचि बढ़ गयी आपके दादा गुरु लक्ष्मणप्रसादजी से आपने जयपुर घराने का तबला सीखा, उसके बाद आप बड़ौदा आये। १९६० में आप प्रो. सुधीरकुमारजी के संपर्क में आये और आपकी अजराड़ा घराने की तालीम शुरु हुई। इसके बाद आप की गिनती एसे तबलावादको में की जाने लगी जिन्होंने भारत वर्ष में जहाँ भी संगीत के कॉलेज और तालीम केन्द्र है वहाँ आपने सिखाने का कार्य किया। ऐसा सौभाग्य बहुत कम शिक्षक को मिलता है इस से आपको अनेक गुणीजनों का मार्गदर्शन मिला। अपनी कुशाग्र बुद्धिसे सभी जानकारी एवं संगीत उपयोगी बातें हमेशा याद रहती थी। आपको सभी घरानों का तबला याद है। तबले के अलावा हारमोनियम, एवं शास्त्रीय संगीत,गजल गायन पर आपका प्रभुत्व है।

तबले के बारेमें देखा जाय तो आपने अनेक बंदिशे बनायी है। आपने अभीतक १९६८ में दिल्ली, १९६९ में अलीगढ़, १९७० में कोलकता के शांतिवन, १९७१ में पिलानी, १९७२ में वनस्थली, मुंबई,सन् १९७४ से १९८२ तक जम्मु मेंइन्स्टीटयुशन ऑफ म्युजिक एवं फायनान्स में प्राध्यापक की हैंसियत से कार्यरत थे उसके बाद १९८३ से आप बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी के म्युजिक कॉलेज में प्राध्यापक के हैसियत से ज़ुड़ गये और निरंतर सेवा दे रहे है साथ ही विद्यार्थीओं को मार्गदर्शन भी दे रहे है और हरेक विद्यार्थी को सही दिशा में तालीम दे रहे है यह कहान अतिश्योक्ति नही होगी कि वे सही अर्थो में गुरु परम्परा का निर्वाहि कर रहे हैं। आप एक संपूर्ण तबला वादक हैं। आपने भारत वर्ष में सभी जाने माने कलाकारों के साथ संगत कि है। आपने अनेक संगीत जलसो में कुशल संगत का मान प्राप्त किया है और आकाशवाणी के ए ग्रेड कलाकार हो।

८ श्री चंद्रकान्त भोंसले :

आपका जन्म संगीतकार घराने में हुआ। आपके पूर्वज शहनाइ वादन करते थे। आपने तबले की प्रारंभिक शिक्षा अपने नानाजी से प्राप्त की। बादमें आपने प्रो.सुधीरकुमार सक्सेनाजी से तालीम लेना शुरु किया। आप गुरुजी के मुख्य शिष्यों में से है। आपने तबला वाद्य पर संपूर्ण अधिकार प्राप्त किया है।

आपकी एक सिद्धहस्त कलाकार में गणना होती है। आपका वादन सुस्पष्ट है। एक बार सुधीरजी ने उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब से कहा कि घूमने चलते हैं। चलते गुरूजी नें खाँ साहब को इनके घर ले गये उस समय आपका रियाज़ चल रहा था। आपका तबला सुनकर खाँ साहब बोले कि कौन मुसंडा बजा रहा है और वह भी अपने घराने का तब गुरूजी ने कहा कि यह वादन मेरा शिष्य कर रहा है। कहने का तात्पर्य इतना ही है आप एक सिद्धहस्त कलाकार है। आपने नामांकित गायकों के साथ संगत की है।

९ श्री सुधीर माईणकर :

आपके पविार में आपके पिताजी विष्णुपंत माईणकर को संगीत में काफ़ी रुचि थी वे स्वयं तबला बजाते थे। इस कारण पिताजी के आज्ञानुसार आपने तबला सीखना शुरु किया आपने पं.मारुतीराव कीर से दिल्ली घराने का तबला सीखा। बाद में आपने दिल्ली घराने के उस्ताद इनामअली खाँ के गंडाबंध शागिर्द हुए। आप दिल्ली घरानेका तबला बजाते थे। संगीत के अलावा आप भारतीय जीवन वीमा निगम में कार्यरत थे और विभागीय अधिकारी थे। आपका तबादला बड़ौदा में हुआ और यहा से ही आप प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी के संपर्क में आये और अजराड़ा घराने की तालीम प्राप्त की और अजराड़ा घराने की रचनाओं में छुपे हुए सौंदर्य का आपने

विशेष अध्ययन किया। दिल्ली घराने के मूल संस्कार अजराड़ा घराने का आड लय का तबला तथा समन्वय के कारण आपको एक नामांकित तबला वादक का मान सन्मान मिला। आपने अनेक शिष्यो को सिखाया और वादक के रूप में संस्कार दिये। आपने प्रशिक्षक विषयक वैश्विक तत्वों को आपने चुना और तबले की शिक्षा देने में उसका उपयोग किया। आपने तबला वादन पर अनेक पुस्तके लिखी।

१० प्रो डॉ अजय व्यंकटेश अष्टपुत्रे :

आपका जन्म २८-३-१९६३ में हुआ। माता पिता को संगीत में रुचि होने के कारण बचपन से ही आप पर संगीत के संस्कार पड़े। ९ साल की उम्र में आपने आपकी तबले की प्रारंभिक शिक्षा श्री प्रभाकर दातेजी से प्राप्त की। आपने बड़ौदा के म्युजिक कॉलेज से डिप्लोमा किया। आपने स्कुलकी पढ़ाई के साथ प्रो.सुधीरकुमार सक्सेनाजी से तालीम लेना शुरु किया। अजराड़ा घराने के संस्कार उसी समय से आप को मिलने लगे। और गुरुजी के प्रमुख शिष्यो में आपकी गणना होने लगी। सन १९८५ में आपने बैचरल की उपाधि प्राप्त की बाद में आप ने १९८७ में मास्टर डिग्री प्राप्त की। पंडित नारायणराव पटवर्धन के कहने से सन् १९८७ में दिल्ली स्थित महर्षी गांधर्व वेद विश्व विद्यापीठ में नौकरी शुरु की १९८७-१९९१ तक इसी संस्था

के आदेशानुसार आपने काफ़ी विदेश भ्रमण किया इस कार्य काल में आप फ्रांस, स्पेन, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, इग्लैंड इत्यादि देशो में घूमे आपने तबला वादक के रुप में अनेक कलाकारो के साथ संगत की और कुशल संगतीकार का मान सन्मान प्राप्त किया।

आप १९९१ में महाराजा सयाजी राव युनिवर्सिटी में फॅकल्टी ऑफ परफॉर्मींग आर्टस् में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। आपने महर्षि दयानंद युनिवर्सिटी, रोहतक के प्राध्यापक रवि शर्मा के मार्गदर्शन में पी.एच्.डी की उपाधि प्राप्त की। उस के बाद आप यहाँ पर प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए। आपके मार्गदर्शन में कई छात्र शोधकार्य कर रहे हैं। आप आकाशवाणी के बी हाय ग्रेड के नियमित कलाकार हैं साथ ही दुरदर्शन के कलाकार है।

११ श्री चंद्रशेखर मधुकर पेंडसे :

आपका जन्म सन १९५९ में बड़ौदा में हुआ। आप के पिताजी स्व मधुकर पेंडसे आगरा घराने के जाने माने शास्त्रीय गायक थे। आपकी तबले की प्रारंभिक शिक्षा आपके मामाजी श्री.प्रभाकर दातेजी से प्राप्त हुई। आप बी कॉम पास है। आपका वादन अति स्पष्ट सुनाई पड़ता है। आपने तबला विषय में मास्टर डिग्री हासिल की है। आप महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी में व्याख्याता के पद पर काम कर रहे है। आपने काफ़ी नामांकित कलाकारो

के साथ संगत की है। जैसे प्रो.वी.सी.रानडे, (वायोलीन), कशाळकर बंधु, गजल गायिका शोभा गुर्टु दिघे, (सितार), पंडित मधुसुदन जोषी जैसे अनेक कलाकारों के साथ संगत की है।

१२ डॉ गौरांग अमृतलाल भावसार :

आप का जन्म गुजरात के मोडासा गाव में ७-६-१९७० को हुआ। आप बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी से मास्टर डिग्री हासिल की। नवोदित कलाकार के रूप में आपने काफ़ी लोकप्रियता पायी है। आप संगीत क्षेत्र की असंख्य संस्थाओं से जुडे हुए हैं। आपने इसी महाविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आप पहले राजकोट स्थित श्री.अर्जुनलाल हिरानी कॉलेज ऑफ जर्नालिजम अँड परफॉर्मींग आर्टस् में सन १९९५ से २००८ तक कार्यरत थे। इसके बाद आप महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी में रीडर की हैसीयत से कार्यरत हो। आपने " तबला नो इतिहास" नामक गुजराती भाषा में किताब लिखी है आपने तबला वाद्य का जन्म हिन्दुस्तान में हुआ है ठोस प्रमाण एक शिल्प द्वारा प्रस्थापित करके सराहनीय काम किया है। तबला हिन्दुस्तान का वाद्य है यह प्रमाणित होता है। आप ने तबला विषय पर अनेक सामायिको में लेख लिखे है। आप विदेश भी जा चुके है।

आप रेडियो पर अनेक कार्यक्रम दे चुके है। आपने अनेक कल्चरल कार्यक्रमो में भाग लिये हैं।

१३ श्री. अनिलकुमार रमनलाल गांधी :

आपका जन्म १९५६ में बड़ौदा में हुआ। आप गुरूजीके सबसे निकट शिष्यों में से हैं। आपने इसी यूनिवर्सिटी मे से मास्टर डिग्री हासिल की है और आपको दो गोल्डमेडल मिले। किसी विद्यार्थी को ऐसा पुरस्कार कम मिलता है। आप महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी में अध्यापक का कार्यभार संभाल रहे हो। आप उपशास्त्रीय संगीत के साथ संगत करने में माहिर है। आप ढोलक बडी ही खुबसुरतीसे बजा लेते है। इस वाद्य पर इनका प्रभुत्व है। भारत सरकार की ओर से आप काफ़ी विदेश भ्रमण कर चुके है, विदेश भ्रमण के दौरान रशिया, लंडन, फ्रान्स, मोरेशिअस, आस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड इत्यादी देशो मे कार्यक्रम दे चुके है।

१४ श्री केदार रविन्द्र मुकादम :

आपका जन्म १९७८ में बड़ौदा शहर में हुआ। आप एक अति कुशाग्र बुद्धि के छात्र रहे है। आपका शैक्षणिक जीवन प्रथम कक्षा का रहा है। आप गुरूजीके सबसे लाडले शिष्य में से है। आपने तबला वाद्य को आत्मसात किया है। इसीलिए संपूर्ण तबला वादक के रुप में देखा जाता है। छोटी उम्र

से ही आपने काफ़ी पुरस्कार प्राप्त किये। आपने स्कुली बच्चों को तबला सिखाने में काफी प्रोत्साहित किया इस लिये काफी छात्र आपके पास तबला सीखते है। आपने कई दिग्गज कलाकारों के साथ संगत की है। श्री अरुण कशालकर, श्री बालासाहेब पुछवाले, श्री चित्तरंजनदास जोतिषी, डॉ प्रदिपकुमार दीक्षीत, श्री अरविंद दिघे, श्री प्रदिप महार्जनी इत्यादि नामांकित कलाकारो के साथ आपने संगत की है। आपको अनेक पारितोषिक भारत सरकार एवं गुजरात सरकार द्वारा प्राप्त हुए है। आपने विदेश भ्रमण सगीत के कार्यक्रमों के लिये किया है आप यु.के सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशीया जै विदेशों में कार्यक्रम दे चुके है।

१५ श्री रमेशचंद्र जयंतीलाल भट :

आपका जन्म गुजरात के पवित्र यात्रा धाम चांदोद गाँव में हुआ। किंतु आपका शैक्षणिक क्षेत्र बड़ौदा रहा है। प्रारंभिक शिक्षा आपने अपने पिताजी से शुरु की। ऐसे देखा जाय तो आपने संगीत विधा में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। बादमें आपने तबला वाद्यकी मास्टर डिग्री गांधर्व महाविद्यालय, अहमदाबाद से प्राप्त की। आज आप तबला विभाग में कार्यरत हैं। आप रेडियो के मान्य कलाकार हैं।

आपने पं. ओमकारनाथ ठाकुर प्रतियोगिता में नंबर पाया था। आप विदेश भ्रमण कर चुके है इन में पूरे अफ्रीकन देशों में कार्यक्रम दे चुके है। आपने अभीतक काफी नामांकित गायक वादको के साथ संगत की है उनमें पं. दयानंद गांधर्व, पं. बालक्रिश्न शिरके, पं. शिवकुमार शुक्ल, नारायण भवरिया, (सितार), श्रीमती रंजना धारवाडकर, अरविंद दिघे, जैसे नामांकित कलाकारो के साथ संगत की है।

१६ श्री नंदकिशोर प्रभाकर दाते :

आपका जन्म गुजरात के एक छोटे गाँव पेटलाद में २५-८-१९७४ में हुआ। आपने तबलावादन की शिक्षा अपने पिताजी से प्राप्त की आपने मास्टर डिग्री प्रथम कक्षा में उत्तीर्ण की साथ ही गांधर्व महाविद्यालय, मिरज से अलंकार परीक्षा उत्तीर्ण की। आप आकाशवाणी के मान्य कलाकार हैं। आपको तालमणि की उपाधि सुर सिगांर संसद, मुबई द्वारा दि गयी। आपने पंडित ओंमकारनाथ ठकुर संगीत प्रतियोगिता प्रथम कक्षा में प्राप्त की। आपने संगीत साधना सांगली द्वारा एवार्ड प्राप्त किया। इसके अलावा यशोमती संगीत महाविद्यालय, पंढरपुर द्वारा प्रतियोगिता में प्रथम क्रमांक प्राप्त किया। अखील भारतीय सास्कृतिक संघ, पुणे द्वारा एवार्ड प्राप्त हुआ। आपके पिताजी तबला

क्लास चलाते है जिसमें प्रारंभिक अजराड़ा घराने की तालीम दी जाती है। अपने काफी गणमान्य कलाकारों के साथ संगत की है।

१७ श्री. चिरायु भोळे :

आप एक कुशल तबला वादक है। आपने एम कॉम परीक्षा पास की है। तबला वाद्य में आपने मास्टर डिग्री हासिल की है। आपने अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय, मीरज से अलंकार परीक्षा उतीर्ण की है। आपने भारत सरकार द्वारा आयोजित तबला सोलो वादन में तृतिय श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त किया। गुजरात सरकार द्वारा आपको दो बार स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। गुजरात प्रांत द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम क्रमांक प्राप्त किया। आप अनेक चर्म वाद्य बजाते है।

१८ श्री श्रीकांत फाटक :

आप को बचपन से ही संगीत का लगाव था और खास कर के आपको तबला वाद्य में जादा रुचि थी। आप गुरुजी के पुराने शिष्यो में से हैं आप बी ए (इकॉनॉमिक्स) से किया साथ में ही आपने तबला विषय में मास्टर डीग्री हासिल की है। आप एक अच्छे संगतकार है आपने भी कई बड़े कलाकारों के साथ संगत की है। जिनमें गजाननराव जोषी, जोषी मास्तर,

शुभदा पराडकर, महाराजा रणजीतसिंह गायकवाड़, परवीन सुलताना ऐसे दिग्गज कलाकारों के साथ देश विदेशो में साथ संगत की है ।

१९ देवेन्द्र दवे :

आपका जन्म राजकोट में हुआ। आपने तबले की प्रारंभिक शिक्षा राजकोट के अजराड़ा घराने के प्रसीद्ध तबला वादक श्री परशुराम भोरवानी से प्राप्त की। आपके गुरु प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य थे। पूरा अजराड़ा बाज की शीक्षा पाने के बाद आप स्वयं बड़ोदा आकर अपने दादा गुरु प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी से प्राप्त की आप हप्ते में दो बार बड़ौदा गुरुजी के घर पर शिक्षा प्राप्त करते थे। आप एक उत्तम तबला वादक एवं शिक्षक के रुप में पूरे राजकोट शहर में पहचाने जाते हो। हाल में राजकोट संगीत कॉलेज में आप प्राध्यापक पद पर कार्यरत हो। आपने काफी कलाकारों के साथ साथसंगत की है।

२० श्री. विक्रम पाटील :

आपने अपनी प्रारंभीक शीक्षा अजराड़ा घराने के बड़ौदा के मशहुर तबला वादक श्री. मदनलाल गांगाणीजी से प्राप्त की। प्रारंभीक शिक्षा प्रप्त कर आपने प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी से तालीम लेना शुरु किया। आप एक सिद्धहस्त कलाकार होने के कारण दाया, बाया पर आपने प्रभुत्व प्राप्त किया

है। आप आसानीसे तबला बाद्य बजा सकते हो याने इतना साफसुथरा वादन करते हो। आप आतंरराष्ट्रिय स्तर के तबला वादक हो। अमेरीका में आपने पंडीत रवीशंकरजी के साथ साथसंगत की है। आप उपशास्त्रीय संगीत के साथसंगत करने में बडे माहिर हो। आपने श्री हरीहरन, शोभा गुर्टुजी, पिनाज मसानी जैसे नामांकित कलाकारो के साथ साथसंगत की है। आपका शिष्य परिवार आणंद, वडोदरा स्थान पर कार्यरत है। आप फिल्म इन्डस्ट्री के जाने माने वादक हो। आप अच्छी तरह से गुजराती गाने गा सकते हो।

२१ रमेश बापोदा :

आपका जन्म संगीत घराने में हुआ। आप के पिताजी एक अच्छे हवेली संगीत के गुजरात के जाने माने कलाकार है। बचपन से ही पिताजी के साथ संगत करने से आपको तबला वादन आगे बढ़ाने महेच्छा हुई और आप वडोदरा आ कर प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य बन गये आपने बड़ौदा आकर म्यजिक कॉलेज से मास्टर डिग्री हासील की आप गुरुजी के पूराने शिष्यो मे से हो। अहमदावाद में आपका तबला वादन सिखाने का क्लास चलता है। आपको भारत सरकार से अनेक एवोर्ड प्राप्त हुए है। आप अमेरिका में भी तबला सिखाते है।

बड़ौदा के संगीत क्षेत्र के दिग्गज कलाकारो का साक्षात्कार :

इस अध्याय में "प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी का गुजरात में अजराड़ा घराने के स्थापन व प्रचार, प्रसार में योगदान " यह विषय शोधार्थी के शोध प्रबंध के लिये अत्यंत मार्गदर्शक होगा और शोध कार्य के लिये अति अवश्यक एवं प्रेरणास्त्रोत होगा।

इस अध्याय में बड़ौदा नगरी के संगीत क्षेत्र से जुड़े दिग्गज कलाकार एवं गुणीजनों का व्यक्तिगत मंतव्य दिया गया है।

१ पद्म श्री. प्रो. आर. सी. मेहता : (संगीत तज्ञ)

एक प्रख्यात म्युजीकॉलाजिस्ट (संगीत तज्ञ) की हैसियत से पूरे भारत वर्ष में पहचाने जाते है। आप बचपन से ही संगीत क्षेत्र से जुडे हुए हैं। आप पहले ऑल इन्डिया रेडीयो स्टेशन पर कार्यरत थे बाद में महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटि की उप कुलपति श्रीमती हंसाबेन मेहता ने आपको म्युजिक कॉलेज में प्रध्यापक पद पर नियुक्ति का न्यौता दिया और आपने उसको स्वीकार किया, और १९५४ में आप म्युजिक कॉलेज के साथ जुड़ गये। आप एक ऐसे शख्स हैं जिनको संगीत जगत का अग्रगण्य मीमांसक माना जाता है। आपका जब शोधार्थी ने शोध प्रबंध के लिये साक्षात्कार किया तब आपने इस विषय को चुनने के लिये सर्व प्रथम अभिनंदन दिया और बताया कि बड़ौदा के नरेश

ने अपने राज्य में 'कलावंत कारखाना' एक अलग दफ़तर खोला था, जिसमें सिर्फ संगीत,नृत्य,नाट्य के निरंतर कार्यक्रम चलते रहते थे। इसमें अनेक कलाकार कार्यरत थे और विभाग की ओर से काफ़ी दिग्गज कलाकारों को गाना, बजाने के लिये न्यौता दिया जाता था इन में कई धृपदिये,ख्याल गायक, ठुमरी गायक, गायिकाओं को आमंत्रित किया जाता था, उन के साथ कई नामांकित तबला वादक जो तबला वाद्य के प्रमुख घरानों से ताल्लुक रखते थे वह साथ संगत करने के लिये आते थे। कितुं कोई भी तबला वादक बड़ौदा में स्थायी नही हुआ। राज दरबार के जो वादक थे ज्यादातर पखावजी होने के कारण पखावज वाद्य का उपयोग अधिक करते थे। बड़ौदा नगरी में जितने भी वादक पखावजी थे सभी कलाकारों को तबला वाद्य का ज्ञान था। कलाकार कारखाना कचहरी से इनका तबादला गायन शाला में किया गया। सही मायने में तबला वाद्य की पहचान किस प्रकार होती है उसकी जानकारी विद्यार्थीओं का नहीं दी जाती थी। यह बात सच है जब सुधीरकुमारजी ने अपना कार्यभार संभाला उसी दिन से शास्त्रोक्त तबला वादन की शरुआत हुई इस में कोई संदेह नहीं है। सभी परीक्षा के पेपर इंग्लिश भाषा में निकलने लगे। अभ्यास क्रम में बदलाव आया। इसका फायदा एसा हुआ कि काफ़ी नये विद्यार्थी दाखिल हुएं छात्रों की संख्या बढ़ने

लगी। दूसरे शहरों सें आने वाले से विद्यार्थीओं कि संख्या बढ़ने लगी। साथ ही विदेशी विद्यार्थीओं की संख्या भी बढ़ने लगी। कॉलेज में तबला विभाग सही मायने काम करने लगा। इससे एक फायदा यह हुआ कि पूरे गुजरात में अनेक शिष्य फैल गये। इससे एक तत्थ सामने आया की गुजरात में अजराड़ा घराने का तबला बजने लगा। आपने यह भी बताया कि संपूर्ण गुजरात में प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी द्वारा अजराड़ा घराने के स्थापन व प्रचार, प्रसार में अत्याधिक योगदान है इस में कोइ संदेह नही है।

२ मार्तंड भट (नाट्य क्षेत्र)

आप गणमान्य ऐसे दिग्गज नाट्य क्षेत्र से जुड़े हुए कलाकार हैं। आपके मार्गदर्शन में आपने अनेकों कलाकार बनाये जो राष्ट्रीय स्तर पर काम करते है। आपने बताया कि जब मैने कॉलेज में दाखिला लिया उसी दिन से हमने देखा सुधीरकुमारजी का सिखाने का अंदाज अलग ढंग का था। सुधीरजी विद्यार्थीओं से घुल-मिल जाते थे। मैने इसी के लिये तबला विभाग में एडमीशन लिया था। और यह सही है कि अजराड़ा घराने का तबला बड़ौदा शहर में पहलीबार बजने लगा। मेरे जैसे कई विद्यार्थी तबला सीखने के लिए दाखिल हुए। आपने आगे कहा कि कॉलेज में तबला विभाग एक सक्षम रूप से उभरा। और एक बात तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि गुजरात में

अजराड़ा घराने का प्रचार प्रो. सुधीर कुमार सकसेनाजी ने किया इस में कोई संदेह नही है।

The M. S. University of Baroda

३ श्री राव साहब जोषी : (शास्त्रीय संगीत गायक)

आप एक शास्त्रीय संगीत गायक एवं आगरा घराने के मशहूर गायक पंडित मधुसुदन जोषी जीके शिष्य हैं। आपकी उम्र ८५ साल की है। आपका जब मे अपने शोध प्रबंध के लिये आपसे वार्तालाप किया तब आपने बताया कि सुधीरकुमारजी का नाम पूरे भारत वर्ष में चर्चा में था, अपना याने पूरे गुजरात का सौभाग्य है की सक्सेनाजी जैसे महान कलाकार गुजरात को मिले। और सद्‌भाग्य से गुरुजी बड़ौदा में बसे। इसका सारा श्रेय बड़ौदा नरेश सयाजीराव को जाता है कि बड़ौदा नगरी में म्युज़िक कॉलेज की स्थापना की। अपने कहा कि सुधीरजी का एकल तबला वादन शुरुआत में मैने सुना था जब सर युवान थे। आपने अपने अनुभव व्यक्त करते हुए कहा कि अभीतक मेरे कान में सर का तबला गूँजता है। मैने अपने बेटे को भी सक्सेनाजी के यहाँ तबला सीखने भेजा। एकल वादन के अलावा मैने सुधीरजी को साथ संगत करते एवं नृत्य के साथ भी सुना है। सही मायने में सक्सेनाजी संपुर्ण तबला वादक थे। इनके आनेसे सिर्फ बड़ौदा में अजराड़ा घराने का तबला बजता नही है किंतु आपका जो शोध प्रबंध का टाइटल है

वो सही में सच है और परे गुजरात में अजराड़ा घराने का तबलावादन घरघर तक पहुँचाया। इस घराने की स्थापना गुजरात में सुधीरबाबु ने की इस में कोई शक नही है।

४ श्री बाळासाहेब मराठे : (तबला वादक)

आप एक अचछे तबला वादक हैं। आप के साथ बातचीत समय आपने पहले से ही कहा कि आपका जो टाईटल है वह एकदम सही है। मैने गुरुजी को दूसरे शहरों मे भी सुना है और इतनी मुलायम संगत करते थे याने तबले का सौंदर्य क्या है उसकी नजाकत कैसी होती है उसका अनुभव होता है। सही मायने में देखा जाय तो सक्सेनाजी की गणना संपूर्ण तबला वादक तरीके से की जा सकती है।

५ श्री मनोहार उखाडे : (सितार वादक)

आप एक ऊच्च शिक्षित होते हुए भी एक कलाकार है। आप कोलकता में साराभाई कंपनी में नौकरी करते थे। आप सितार बजाते है और पं मणीलाल नाग के शिष्य हैं। आपसे बात करते समय उन्होने बताया कि पूरे गुजरात में नब्बे प्रतिशत तबला वादक प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य है। इससे तय होता है की गुरुजी के आने से ही गुजरात में सही तबला बजना शुरु हुआ याने शैक्षणिक क्षेत्र में एक तेहलका मच गया।

६ पंडित सुंदरलाल गांगाणी (कला गुरु - कथक नृत्यकार)

जिस तरह से सुधीरकुमार सक्सेनाजी आने के बाद तबले के अजराड़ा घराने का प्रचार, प्रसार व स्थापना पूरे गुजरात में हुई उसी तरह जयपुर घराने का कथक नृत्य आप के आनेसे बड़ौदा में शुरु हुआ। साथ में आप भी अजराड़ा घराने के तबला वादक है। आपने कहा कि यह सो प्रतिशत सच है कि गुजरात में सक्सेनाजी के आने से ही अजराड़ा घराने का तबला बजने लगा और इनके शिष्य परिवार द्वारा एवं उनके कार्यक्रम द्वारा पूरे गुजरात में फैला।इसी तरह से आपका जो कार्य चल रहा है वह सार्थक और सो प्रतिशत सही है।

७ श्री जलेन्दु दवे : (चित्रकार)

आप एक अच्छे चित्रकार साथ में एक तबलावादक हैं। आपने तबला वादन कि शिक्षा गायन शाला में ली। उसी दिन से आप गुरुजी के शिष्य बन गये। आप ने कहा की प्रो. सुधीरकुमारजी भारत के अग्रगण्य तबला वादको में से हैं किंतु खुदकी वाह,वाह करने में से नही थे। सिर्फ तबला अपने पास न रह जाय उसका उपयोग दुसरो को सिखाने में उनको जादा दिलचस्पी थी। इस लिये उन्होनें खुदको एक गुरु की हेसियत से अनेक शिष्य गण तैयार किये। गुरुजी कभी प्रसिद्धी में नही मानते थे। और पुरे गुजरात में आपने

अजराड़ा घराने का स्थापन व प्रचार,प्रसार में कोई कमी नही रखी और सिद्धहस्त कलाकार और एक आदर्श गुरु थे और पूरे हिन्दुस्ताम में एक अती उत्तम तबला वादक में आपकी गणना होती है।

चिर स्मरणीय गुरुजी

१९५० से लेकर २००७ तक प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी ने ५५ साल तक अपने शिष्यों को शिक्षा देने का एवं अजराड़ा घराने की परंपरा निरंतर चलती रहे, इसी लिये हरेक शिष्यों को सम्पूर्ण दृष्टिसे तैयार किया । ऐसा लगता है कि इस निरंतर सेवा से वह २००७ तक पूर्ण रुप से संतुष्ठ हो चुके थे, अर्थात अपनी शारीरिक परिस्थिति का ख्याल करते हुए, इस धरती पर अब मेरा कोई कार्य बाकी नहीं रहा है जिससे मेरा परिवार,मेरा सांगितिक परिवार एवं जनमानस मुझे भूला न सके।

ऐसी सेवा करते करते भी, कुछ नहीं तो जातेजाते हस्ताक्षर ठीक न होते हुए भी, कोई दूसरा विचार न करते हुए बीस पन्नों की कई महत्वपूर्ण रचनाएं बनायी जो अपने शिष्यो के काम आये। ऐसी रचनाएं लिखते समय मन में ठान लिया कि अब मेरा अंतकाल करीब आ रहा है। घर के सदस्यों को भी बतलाया कि अब मुझे इस धरती से जाना चाहिये, एक बात पर दृष्टिपात करे तो एक तथ्य सामने आता है,अस्पताल में स्वयं दाखिल होने के बाद ईश्वर और स्वयं एक निद्रा में थे जातेजाते भी हर विद्यार्थी को अपने मन से अपने खुले दिलेस, अतंकरण से आशीर्वाद दिया। एसी कृपा दृष्टि करने वाले गुरुजी एक भगवान स्वरुप थे। यदि सभी शिष्य धन्यवाद देना चाहें

तो वह बड़ा अपराध होगा। किंतु ऐसे परम आदरणीय गुरुवर प्रो. सुधीरजी इस धरती पर आये यह मेरा ही नहीं बलिक समस्त शिष्यों का अहोभाग्य है।। अतः ऐसे महान गुरु धन्यवाद देने के पात्र नही बल्कि पूजनीय पात्र है। इस प्रकार सारे विचार शोधार्थी के मन में उसी दिन आये जिस दिन ता ३०-११-२००७ को सुबह ११-३० बजे आपने अपना अंतिम श्वास लिया और अनका देह पंचमहाभूतों में विलीन हुआ। आज सिर्फ उनकी बातें याद आती हैं।